CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th Mar. 2021, Revised on 25th Mar. 2021, Accepted 29th Mar. 2021

आलेख

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का महिला शिक्षा तथा पर्यावरण पर चिंतन

* सुनील कुमार जैन
शोधार्थी (शिक्षा)
केरियर पाइन्ट यूनिवर्सिटी, कोटा
** डॉ. श्रीकान्त भारतीय
शोध निर्देशक एवं एसोसिएट प्रोफेसर
जवाहर लाल नेहरू शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा राजस्थान
Email: suniljain121@gmail.com, Mo.- 9414806142

बीज शब्द – *फ्रांसिसी क्रांति, इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद आदि।*

सार संक्षेप

विचारों से महान् तथा कार्यों से अधिक होकर लौकिक सफलता भले अर्जित कर ली जाए, किंतु आध्यात्मिक जगत में कार्य एवं चिंतन का मणि–कांचन संयोग है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का स्वयं का आत्मानुभव जितना विशाल है, उतनी ही उर्वर उनके विचारों की पृष्ठभूमि। आपका चिंतन शिक्षा, समाज, संस्कृति, अध्यात्म की गहराई को लिए हुए है। आपका सृजनशील साधुता और साधनाशील साहित्य, परस्पर मणि–कांचन के रूप में सुशोभित है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की संवेदी दृष्टि, व्यापक अवलोकन और दीर्घ अनुभव फलस्वरूप आपका शैक्षिक चिंतन एक विशिष्ट महत्व रखता है। आपका भारतीय दृष्टि से महिला शिक्षा एवं पर्यावरण संबंधित विविध पक्षों को समय–समय पर विश्लेषित किया। आपके विचारों में आश्चर्यजनक रूप से व्यावहारिक है।

जीवन परिचय

आपकी बाल्यावस्था अत्यन्त रोचक एवं आश्चर्यकारी घटनाओं से भरी है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के धारी रहे। आपकी मातृभाषा कन्नड़ है। आपको कक्षा नवमी तक मराठी माध्यम से अध्ययन किया। इसके उपरान्त आपका लौकिक पढ़ाई से मन उचट गया और आप अलौकिक आत्म तत्व की खोज में लगे गये। चरित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी के प्रवचन सुनकर 9 वर्ष की बाल उम्र में आपके हृदय पर वैराग्य का बीज अंकुरित हो गया। 12 वर्ष की उम्र में आचार्य श्री देवभूषण जी के सान्निध्य में आपका मूंजी बंधन संस्कार हुआ।

यौवन की दहलीज पर पग रखते ही जुलाई 1966 आपने सदा–सदा के लिए सदलगा त्याग दिया और राजस्थान प्रांत अंतर्गल जयपुर पहुंचकर आचार्य श्री देशमुख जी से आजीवन ब्रहमचर्य व्रत अंगीकार कर लिया। 1967 में श्रवणबेलगोला में श्री बाहुबली भगवान के महामस्ताकाभिषेक के समय आप आचार्य संघ के साथ पदयात्रा करते हुए वहाँ पहुँचे औ वहीं अपने आचार्य श्री देवभूषण ही से सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। आपकी ज्ञान पिपासा ने आपको मुनि श्री ज्ञानसागर जी के पास पहुंचा दिया।

जिस तरह एक शिल्पी किसी अनगढ़ पत्थर से व्यर्थ को हटाकर उसमें भगवान को तराशता है, उसी तरह आपके गुरू ने अत्यन्त लगन एवं तत्परता से आपको तराशा। जब उन्हें प्रतीत हुआ कि आपको पूर्ण रूप से तराशा जा चुका है, तो उन्होंने आपको जग के सम्मुख प्रस्तुत करने का विचार किया। आषाढ़ शुक्ल पंचमी 30 जून 1968 को अजमेर की पुण्यभूमि पर आचार्य गुरूवर श्री ज्ञानसागर जी ने आपका दिगम्बरी दीक्षा प्रदान की। आपकी उत्तम पात्रता एवं प्रखर प्रतिभा से प्रभावित होकर आपके गुरू ने आपको अपना गुरू बनाया। 22 नवम्बर 1972 को नसीराबाद की पुण्यधारा पर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने अपना आचार्य पद आपको सौंपकर आपका शिष्यत्व स्वीकार कर, आपके चरणों में अपनी सल्लेखना की भावना व्यक्त की। यह उनकी मृदुता और ऋजुता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण था। ऐसा गुरूत्व और ऐसा शिष्यत्व इतिहास में दुर्लभ है।

आपके दीक्षित होते ही आपके माता–पिता एवं भाई–बहिनों ने भी आपके मार्ग का अनुसरण किया। यह इस सदी की प्रथम घटना है। जहाँ एक ही परिवार के आठ सदस्यों में सात सदस्य, सात तत्वों का चिंतन करते हुए मोक्ष मार्ग पर आरूढ़ हो गए। माँ श्रीमती ने आर्यिका व्रत ग्रहण का आर्यिका श्री समयमति नाम पाया, तो पिता श्री मल्लप्पा जी मुनिव्रत अंगीकार कर 108 मुनि श्री मल्लिसागर नाम पाया। दोनों अनुज भ्राता मुनि श्री समयसागर जी एवं मुनि श्री योगसागर जी के नाम से वर्तमान में आचार्य संघ की शोभा बढ़ा रहे हैं। दोनों बहने शांता एवं सुवर्णा आजीवन ब्रहमचर्य व्रत से अलंकृत होकर धर्म साधना में रत है।

आपके पवित्र कर कमलों से अभी तक 130 मुनि दीक्षा, 172 आर्यिका दीक्षा, 56 ऐलक दीक्षा, 64 क्षुल्लक दीक्षा एवं 3 क्षुल्लिका दीक्षा सम्पन्न हो चुकी है। वर्तमान में विराट संघ है। आपकी निदोर्ष चर्चा से प्रभावित होकर 1000 से अधिक युवा युवतियाँ आजीवन ब्रहमचर्य व्रत ग्रहण करने वाले ये सभी भाई–बहिन उच्च शिक्षित एवं समृद्ध परिवार से है। तीर्थकर प्रकृति के बंध के कारणभूत लोक कल्याण की भावना से अनुप्राणित होकर आपने अपने लोकोपकारी कार्यों हेतु अपनी प्रेरणा व आशीर्वाद प्रदान किया। जैसे जीवदया के क्षेत्र में सम्पूर्ण भारत वर्ष में संचालित गौ शालाएँ, चिकित्सा क्षेत्र में भाग्योदल चिकिस्सा सागर, शिक्षा क्षेत्र में प्रतिभा स्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ जबलपुर (मध्यप्रदेश) डोगरगढ़ (छत्तीसगढ़) एवं रामटेक (महाराष्ट्र) शांतिधारा दुग्ध योजना बीना बारहा, पूरी मैत्री, हथकरघा आदि लोक कल्याणकारी संस्थाएँ आपके आशीर्वाद का ही सुफल है।

स्त्री शिक्षा की अवधारणा

हमारी भारतीय सांस्कृति में प्राचीन समय से शिक्षा का अर्थ विद्या अर्जन करना रहा है जिससे सत्य की खोज हो तथा वह ज्ञान प्राप्त हो जो हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाए। यही इस जीवन का अन्तिम ध्येय है, किन्तु समय बीतने के साथ–साथ परिस्थितियाँ बदली और उन परिस्थितियों में हमारी अपनी भारतीय शिक्षा पद्धति भी नष्ट कर दी गई। हम स्वतंत्र होकर भी पाश्चात्य शिक्षा दर्शन का अंधानुकरण कर रहे हैं। यही कारण है कि आज के शिक्षण संस्थानों को विद्यालय अर्थात् विद्या का आलय तो कदापि नहीं कहा जा सकता है। विद्या तो, व्यक्ति को रंगत व निष्णात् कर उसे सर्वाधिक व्यक्तित्व का विकास करती है, उसे अपने जीविकोपार्जन के योग्य बनाती है, किन्तु यदि यही शिक्षा व्यक्ति को विशेषकर महिलाओं को अहंकारी, संस्कारहीन तथा संवेदनाशून्य बनाती है तो यह वर्तमान शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी विसंगति एवं चुनौती है।

स्त्री शिक्षा के महत्व पर राधाकृष्णन आयोग ने सुझाव दिया है कि– ''स्त्रियों के शिक्षित हुए बिना किसी समाज के लोग शिक्षित नहीं हो सकते। यदि सामान्य शिक्षा स्त्रियों या पुरुषों में से किसी एक को देने की विवशता हो, तो यह अवसर स्त्रियों को ही दिया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा होने पर निश्चित रूप से वह उनके द्वारा अगली पीढ़ी तक पहुँच जाएगी।'' ''शिक्षा'' किसी भी व्यक्ति को स्वतंत्र सोच और स्वावलंबन दोनों से ही जोड़ती है। पर जब स्त्री–शिक्षा की बात होती हैं तो 'स्वतंत्र सोच' हाशिए पर धकेल दी जाती हैं, हाँ शिक्षा का संबंध स्वावलंबन से अवशय जोड़ा जा रहा है परन्तु सशर्त।

यह प्रयास युगों से किया जा रहा है कि स्त्री परिवार और समाज द्वारा बाँधी गई परिधियों के भीतर ही चले और जब 'स्त्री शिक्षा की बात हो तो तस्वीर के कई पहलू सामने आते हैं। लड़कियों का उच्च शिक्षा से यूँ दूर रहना भारतीय समाज की दोहरी सोच की परिणति है। पुत्रों को बेहत्तर से बेहत्तर सुविधाएँ दी जाती हैं, और बेटियों से बिना किसी शिकायत के जीवन जीने की अपेक्षा की जाती है।

अगर वास्तविक अर्थों में महिला सशक्तिकरण चाहते है तो बेटियों की शिक्षा को अपनी केन्द्रीय विचारधारा में जगह देनी होगी क्योंकि उनके लिए शिक्षा का तात्पर्य आखर ज्ञान मात्र नहीं है। शिक्षा निर्णय लेने की क्षमता, आर्थिक स्वावलंबन और अधिकारों के प्रति जागरूकता का मार्ग प्रशस्त करती है।

कोठारी शिक्षा आयोग (1966) में कहा गया कि, ''मानवीय साधनों के सम्पूर्ण विकास के लिए परिवारों के सुधार हेतु और शिक्षा अवस्था के लिए प्रभावशाली वर्ष में बच्चे चरित्र निर्माण के लिए पुरुषों की अपेक्षा स्त्री की शिक्षा की अधिक आवश्यकता है।''

अन्य विद्वानों के अनुसार, ''माँ सर्वोत्तम शिक्षिका होती है। माँ ही बालक की प्रथम शिक्षक है तथा माँ हजार शिक्षक के बराबर है।''

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ''वे देश ही उन्नति कर सकते हैं जहाँ स्त्रियों को उचित स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध किया जाता है।''

आचार्य विद्यासागर जी महाराज नग्नपाद पदयात्री हैं, जो नदी की तरह प्रवाहमान स्वच्छंद, निर्मल व राग, द्वेष, मोह से दूर इन्द्रियजित हैं। ज्ञेय और सुकोमल व्यक्तित्व के धनी, भौतिक कोलाहल से दूर रहते हैं। वे ज्ञानी, मनोज्ञ और वाग्मी साधु अपरिग्रही निर्ग्रंथ दिगम्बरत्व धारण किये हुए प्रतिभा और तपस्या की जीवंत मूर्ति हैं। आचार–विचार की एकता के समर्थक व्रत नियम में अनुशासित मौनी साधक हैं। 'सरलता और सादगी का जीवन ही मानवता का विकास हैं' की दिव्यध्वनि गुंजरित करने वाले प्रभावक पुंज मुनि हैं। 'पुरुषार्थ करो अंतरंग सुधारो' जैसे सूत्र का शंखनाद करने वाले समाज सुधारक हैं। 'हित का सृजन अहित का विसर्जन' जैसे शिक्षा सूत्र देने वाले शिक्षाशास्त्री हैं। 'अतिव्यय नहीं, मितवयय करो, धन का समुचित वितरण करो' महामंत्र के उद्घोषक अर्थशास्त्री हैं। अतः आचार्य विद्यासागर जी महाराज को आचार्य प्रवर के रूप में संबोधित करना और उनके विचारों को जानना आज अत्यन्त आवश्यक है।

महिला शिक्षा संबंधी विचार

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के साहित्य एवं कृतित्व में महिला के महत्व एवं स्वरूप का विस्तृत विवेचन मिलता है। जिसमें उन्होंने नारी के गुणों और शिक्षा की महत्ता को पुरुषों से अधिक स्वीकारा गया है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का कहना है कि महिला अनंत शक्ति पुंज है। कितने ही दृष्टांत ऐसे भी आते हैं, जिनमें महिला आगे बढ़ती देखी गयी है और पुरुष को पीछे हटते देखा गया है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का मानना है कि बीज के अनुसार वृक्ष एवं वृक्ष के अनुसार फल आता है। मूल को सींचने से जैसे वृक्ष पुष्पित पल्लवित होता है, उसी प्रकार महिलाओं को सुसंस्कृत करने से मानव समाज भी पल्लवित–पुष्पित व सुसंस्कृत बनता है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का शैक्षिक उद्देश्य मनुष्य को मानव बनाने का है। मानव जगत में स्त्री व पुरुष दोनों आते हैं। महिलाओं में भी मानवता रहे यह आवश्यक है। इस मानवता को पाने के लिए महिलाओं की शिक्षा में नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा में नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा अनिवार्य हो यह आवश्यक है। इससे महिलाओं का जीवन तो सुधरेगा ही, साथ ही वे संस्कारी संतानों के निर्माण से समाज निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका निभाएगी। इनकी शिक्षा आवश्यक है कि जिससे उनमें विवेक दृष्टि जाग्रत हो, साथ ही वे उच्च आचरण को अपनाएँ क्योंकि महिलाओं के आचरण का प्रभाव संतान एवं परिवार पर निश्चित रूप से पड़ता है।

महिला शिक्षा–प्रणाली को इस प्रकार विकसित करना होगा, जो उनमें प्रथमतः पवित्रता, आत्मत्याग, मातृसुलभ कोमलता, स्नेह, असीम धैर्य तथा संतोष आदि आदर्शों के प्रति प्रशंसा, आदर और निष्ठा का भाव बैठा सके। द्वितीयतः शिक्षा बौद्धिक क्षमताओं को विकसित करे सकें ताकि उन्हें अपने सांस्कृतिक भावों तथा आदर्शों के वास्तविक महत्व पर एक युक्ति संगत पकड़ हो और वे अपने ग्रहस्थ्य तथा सामाजिक जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं से बुद्धिमतापूर्वक निपट सकें। तृतीयतः जब कभी उनके लिए जीविकापार्जन अपरिहार्य हो जाये तो शिक्षा उन्हें उपार्जन में सक्षम बना सके।

महिलाओं का शिक्षा के अंतर्गत इतिहास, गृहविज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, गृहशिल्प तथा आदर्श चरित्र संबंधी सिद्धान्तों की शिक्षा अवश्य रूप से देनी चाहिए। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कभी भी सहशिक्षा के पक्ष में नहीं रहे हैं, उनका मानना है कि महिला को पढ़ाने वाली भी महिलाऐं होनी चाहिए जिससे वे उन्हें योग्य संस्कार प्रदान कर सकें। उनमें विनय, सहिष्णुता, अनुशासन, उदारता, मैत्री जैसे सद्गुणों का विकास आवश्यक रूप से हो। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, दिखावा, विलासिता आदि कृत्यों के प्रति स्त्रियों का उदासीनता का भाव रहें। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज महिलाओं को ऐसी शिक्षा प्रदान करवाना चाहते हैं, जिससे उनका चरित्र निर्माण हो सके तथा मानसिक शक्ति का विकास हो सके और महिलाऐं अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।

सभी रूपों में नारी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आचार्य प्रवर ने मूकमाटी महाकाव्य में नारी को प्राचीन मूल्यों एवं उत्तम आदर्शों के अनुरूप नवीन दृष्टिकोण से महिमा मण्डित किया है। उन्होंने परम्परागत नारी के समानार्थी शब्दों का आलोचनात्मक अर्थ न करके उनकी प्रशंसात्मक व्याख्या की है। इस महाकाव्य में नारी के समर्पण के साथ शिक्षा की अनुगूँज भी है, क्योंकि नारी जब प्रतिदान करती है तब अरि याने शत्रु भाव से नहीं, मित्र भाव से करती है। नारी करूणा की प्रतिमूर्ति है। इसी प्रकार महिला यानी मंगलमय माहौल, जो शिक्षा प्राप्त कर पुरुष के जीवन में लाती है। अबला बलहीन नहीं, बल्कि हर प्रकार की बला या समस्या से रहित वह प्रेरणा का स्रोत है। आचार्य प्रवर ने नारी के 'कुमारी' स्वरूप को तो और अधिक सार्थक बताया है। यह धरा सम्पदा–सम्पन्न तब तक रहेगी, जब तक यहाँ कुमारी रहेगी। उन्होंने जहाँ 'सुता' के रूप में सुख सुविधा देने वाली वहीं दूसरी ओर 'दुहिता' के रूप में दूसरों केहित की भावना रखने वाली बताया है। उनका कहना है कि 'अंगना' के रूप में शाश्वत निरंजन तत्व साथ लिए रहती तथा मातृरूप में वह ज्ञाता व ज्ञेय की धारणी है। इस प्रकार समानार्थी शब्द भी अपने में भारतीय संस्कृति के उदात्त गुणों को समाहित किये हुये है। इतिहास हमारे परिप्रेक्ष्य में गवाही देता है कि नारी करूणा, दया, ममता और अगाध विश्वास की प्रतिमूर्ति पहले है बाद में कुछ और। आचार्य प्रवर ने 'मूकमाटी' में सर्वप्रथम भारतीय संस्कृति के रूप में नारी की ही समीक्षा प्रस्तुत की है, क्योंकि वह पुरुष के सुंदर समतल जीवन में पीयूष स्रोत सी बहकर शिक्षा प्रदान करती है।

स्त्री शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुये उनके पर्यायवाची शब्दों के व्युत्पतिपरक व्याकरणिक अर्थों से नवीन अवधारणायें स्थापित की है। जिसमें उन्होंने संकेत दिया है कि नारी के अवगुणों को न देखकर उसके गुणों को पहचानों, वह जीवन में पूरक बनकर आई, उस अपूर्व को पहचानो। स्त्री के विविध रूपों की व्याख्या अपने आपमें सम्पूर्ण है। स्त्री का हर रूप किसी न किसी प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है।''

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का मानना है कि, ''लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है, जबकि लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा है।'' इसलिए महिला शिक्षा आवश्यक है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अनुसार एक नारी पिता के कुल को, विवाह के बाद पति के कुल को धर्म मार्ग में आगे बढ़ती है। साथ ही गुरु के कुल को भी रोशन करती है। महिला अनेक भूमिकाओं का निर्वहन करती है। अपनी सभी भूमिकाओं में सफलता पाने के लिए महिला का शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के विचार महिला को मात्र शिक्षित करने तक ही सीमित नहीं है। बल्कि शिक्षित महिलाऐं अन्य बालिकाओं को सुसंस्कारित व सुशिक्षित करें। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का कहना है कि, ''माँ संतान की सुषुप्त शक्ति को जाग्रत करने में ही अपनी सच्ची सार्थकता मानती है।'' आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने समाज में महिलाओं की नौकरी का विरोध नहीं करते परन्तु आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का कहना है कि इसके कारण बच्चों का भविष्य नहीं बिगड़ना चाहिए। निश्चित ही महिला शिक्षा से आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का तात्पर्य बच्चों को संस्कारित करने से है, क्योंकि शिक्षा ही संस्कार की जननी है।

पर्यावरण शिक्षा संबंधी विचार

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने साहित्य में मनुष्य और उसके आसपास के वातावरण की गहनतम् और सूक्ष्मतम् सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत किया है। जिसमें उन्होंने प्रकृति और पुरुष को गहराई से जानने और समझने का प्रयत्न किया है। उनके यही

विचार पर्यावरण के वास्तविक स्वरूप को समझने एवं सुरक्षित रखने के आधार है। उनके विचारानुसार जीव एवं जगत से समन्वित आचरण का नाम ही पर्यावरण है और उसके मध्य संबंधों की मधुराता का नाम पर्यावरण संरक्षण है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने प्राणी व जगत की जिस सूक्ष्मता से व्याख्या की है, वह अत्यन्त गूढ़ एवं महत्वपूर्ण है। उनके उपदेशों में षट्काय अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति और त्रसकाय के जीवों की स्वार्थ की शिक्षा मिलती है। इन्हीं षट्काय जीवों की संहति पुरानी शब्दावली में पर्यावरण से अभिनिहित है। जीवों को अपने ढ़ंग से जीने देना धर्म है और उन्हें कष्ट पहुँचाना हिंसा है। आचार्य प्रवर का कहना है कि अपने संयत और सम्यक् आचरण से इस षट्कायिक पर्यावरणीय सहति की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का मानना है कि पर्यावरण व्यक्ति की वृद्धि, प्रकृति, व्यवहार, विकास और उसके अस्तित्व को प्रभावित करता है। यह व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने प्राकृतिक अथवा भौतिक पर्यावरण तथा सामाजिक पर्यावरण दोनों को सम्मिलित किया है। प्राकृतिक पर्यावरण का संबंध प्रकृति के साथ है। इसमें जलवायु, वन, भूमि, खनिज पदार्थ, पशु–पक्षी, जीव जन्तु, नदियाँ सूर्य का प्रकाश तथा जैविकीय एवं अजैविकीय सभी तत्व सम्मिलित है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के माध्यम से अपनी उस पीड़ा की अभिव्यक्ति दी है, जो पर्यावरण असंतुलनजन्य है। उनके अनुसार, ''हिंसा का विकास, विनाश का निमंत्रण है।'' ''पर्यावरण बचाओं वरना अकाल मरण'' प्रकृति हमें प्रेम सिखाती घृणा नहीं, बचाओ हरियाली नहीं तो मिट जायेगी खुशहाली'', ''प्रकृति के विपरीत चलना साधना की रीत नहीं'' जैसे सूत्र देकर पर्यावरण जागरण की अलग जगाई है।

वृक्ष हमें जीवन की श्वासें, खाने का फल तथा धूप में छाया प्रदान करते हैं, उन्हें ही बड़ी निर्दयता से काटा जा रहा है। मानव की इस स्वार्थवृत्ति से क्षुभित होकर आचार्य प्रवर कहते है कि ''हरियाली को रखाने वालो जानवरों भी इतनी हरियाली नहीं उजाड़ी जितनी की आदमी ने। आज व्यक्ति हरियाली को भी नष्ट कर रहा है और हरियाली खाने वाले जानवरों को भी। व्यक्ति की विलासिता व आडम्बरपूर्ण जीवन शैली से ही प्रकृति की सम्पदा समाप्त हो रही है।'' उनका मानना है कि प्रकृति ने मनुष्य को खराब नहीं किया, लेनिक इस मनुष्य ने प्रकृति को तबाह कर दिया। आज आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य प्रकृति के अनुरूप चलें।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का स्पष्ट संदेश है कि ''प्रकृति में रहो लेकिन प्रकृति के अनुसार रहो, प्रकृति के अनुसार चलने में ही मानव जाति का भला है। इसके प्रतिकूल मत चलो।'' वे पर्यावरण और स्वास्थ्य का घनिष्ठ संबंध बताते हुए कहते है कि ''पर्यावरण और स्वास्थ्य को ठीक रखना ही मानव जाति का विकास है। अतः पर्यावरण को बिगाड़ कर हम अपने स्वास्थ्य को जिंदा नहीं रख सकते।''

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज सअ प्रकार में पर्यावरण से बचने क लिए पंचशील के सिद्धानत – अहिंसा, सत्य, आस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन प्रत्येक विद्यार्थी को अनिवार्य होना चाहिए। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने शाकाहार को पर्यावरण संरक्षण का आधार स्तंभ मानते है और जैन दर्शन का परस्परोपग्रहों जीवानाम् का मूल मंत्र हर प्राणी को प्रकृति और पर्यावरण से जोड़ता है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का मानना है कि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के समाधान में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। शिक्षा के द्वारा लोगों को इस समस्या के प्रति चेतनता उत्पन्न की जा सकती है। शिक्षा द्वारा ही लोगों को प्राकृतिक एवं सामाजिक प्रदूषण तथा उसके कुप्रभावों के संबंध में समझाया जा सकता है। पर्यावरण शिक्षा लोगों में पर्यावरण सुधार के लिए मानसिक रूप से तैयार कर सकती है। अतः आचार्य प्रवर कहते है कि पाठ्यक्रमों में पर्यावरण संबंधी शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

महिला शिक्षा के बारे में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के उपरोक्त विचारों से यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध प्रतीत होती है कि शिक्षित स्त्री ही न केवल परिवार का वरन् संस्कारों के माध्यम से राष्ट का निर्माण भी करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जैन, शीतलचन्द्र (2005), ''विद्यासागर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषयक शोध सन्दर्शिका, मैत्री समूह, आगरा।
2. आचार्य विद्यासागर सामूहिक चर्चा, ओडियो सी.डी. जबलपुर, मध्यप्रदेश, 16 फरवरी 2005
3. जौहरी, वी. पी. एवं पी.डी. पाठक (1966), 'भारतीय शिक्षा का इतिहास', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. आचार्य विद्यासागर (1988) मूकमाटी महाकाव्य, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, पृ.स. 203 से 207
5. आचार्य विद्यासागर (1998), सिद्धोदय सार, श्री विद्यासागर इंटरप्राइजेस, इंदौर, मध्यप्रदेश, पृ.स. 34–37
6. आचार्य विद्यासागर (1996), समग्र (खण्ड चार), समग्र प्रकाशन सागर, मध्यप्रदेश पृ. 612
7. आचार्य विद्यासागर, सामूहिक चर्चा आडियो सी.डी. विलासपुर, छत्तीसगढ़ 6 मार्च 2013
8. मिश्र, आत्मानंद (1976), 'भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9. माचवे, प्रभाकर एवं राममूर्ति त्रिपाठी (2007), मूकमाटी–मीमांसा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली।
10. सहाय, श्री जगदीश (1990), 'मानव जीवन और उसके मूल्य' पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी।
11. शर्मा, निशानंद (1975), 'जैन वाङ्मय में शिक्षा के तत्व' प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली बिहार।

Corresponding Author

*** सुनील कुमार जैन**

शोधार्थी (शिक्षा), केरियर पाइन्ट यूनिवर्सिटी, कोटा

**** डॉ. श्रीकान्त भारतीय**

शोध निर्देशक एवं एसोसिएट प्रोफेसर

जवाहर लाल नेहरू शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा राजस्थान

Email: suniljain121@gmail.com, Mo.- 9414806142